Sri – Om
VEDIC MATHEMATICS AWARENESS YEAR

E-Newsletter Issue no 141 dated 23-03-2015
For previous issues and further more information visit at www.vedicganita.org

ॐ । गायत्री छन्द । सरसवती मंत्र। महेश्वर सूत्र। गणित सूत्र

Om Gyatri Chand, Saraswati Mantra, Maheshwar Sutra, Ganita Sutras

वैदिक गणित
(सूर्य रश्मियो का गणित)

I. देवनागरी वर्णमाला II. जड़ भरत
III. वर्णो की उत्पति IV. पंचीकरण
V. ज्योति व्यूह अंक

VI
आ ब्रह्म् भुवन लोक

अ + अ = आ का आधार १ + १ = २ गुणो वाला है। प्रत्येक शब्द जो 'आ' का आधार लेता है। जैसा कि 'आकृति', उन शब्द के अर्थो तक पहुंचने के लिये, 'आ' के आधार की सहायता की आवश्यकता रहती है।

ये सहायता हमे 'ब्रह्म्, भुवन वा लोक' शब्दो के मूल्यो व गुणो के ज्ञान तक पहुचाती है। अंको व ज्योमिति का समान्तर प्रवाह, साख्य एवं योग के समान्तर चलने वाली धारा है। इसलिये देवनागरी वर्णमाला के वर्णो की आकृतिया अपने आप मे वर्णो के वशिष्ट मूल्यो व गुणो को सन्निहत किये हुये है।

Vedic Mathematics
(Sunlight format Mathematics)

I. Devnagri alphabet II. Jad Bharat
III. Creation of letters IV. 5 x 5 format V. Transcendental code value

VI
Along organization format of elongated first vowel

The base of अ + अ = आ is of the values and features of 1 + 1 = 2. Every word which takes shelter of the base of 'आ', as 'as is the word 'Akarati', a reach for its meanings can be had with the help of values and features of 'आ'.

This help will take uptill the conceptual formulation words 'ब्रह्म्, भुवन वा लोक'. The parallel flow of values and features of numbers and geometric bodies is of the virtues of Sankhiya and Yoga being of parallel formats. It is for this reason that the forms and frames of individual letters of Devnagri alphabet are imbibing especial values and features of the letters.

प्रत्येक वर्ण की आकृति के विशेष मूल्य व गुण है इन विशेष मूल्यो व गुणो को ज्ञान लेने से ही वर्णो के शब्दो मे व्यवस्थित प्रयोग की जानकारी होती है। इस कारण से वर्णमाला की लिपि का अपना विशेष उपयोग है। अतः हमे सर्वप्रथम देवनागरी वर्णमाला की लिपि आधार जिसपर वैदिक सहिताये सुगंठित है, उसे जानना चाहिये,	The form and frame of every letter has especial individualistic values and features. It is by the knowledge of these special values and features that one has a reach of the individual letters. For this reason the script form of alphabet has its distinguishing role. So, first of all one shall know the script of Devnagri alphabet with which the Vedic samhitas are composed.
ऐसा ज्ञान लेने पश्चात हमे वर्णमाला के अलग अलग दो वर्णो के आपसी सम्बंध से उभरने वाली व्यवस्था को जानना चाहिये। इस व्यवस्था बारे जानकारी अपने आप मे शब्द भण्डार मे पहुचने की प्रथम सीढ़ी है।	With this knowledge one shall go for the knowledge of the organization of arrangement of pair of letters of the alphabet. The knowledge of this organization is the first step to enter the domain of 'words'.
इस दिशा मे एक स्वर वा एक व्यंजन की व्यवस्था से उभरे मूल्यो वा गुणो को प्रथम पंक्ति मे रखना चाहिये, ओर उसके पश्चात एक स्वर वा दो व्यजंनो की व्यवस्था को जानने की ओर अग्रसर होना चाहिये।	In this direction the arrangement of the organization of one vowel and one consonant, shall be put in the first row / first compartment. And thereafter to follow the arrangement of the organization of one vowel and pair of consonants.
इस तरह से वर्णो व अक्षरो की व्यवस्थाओ को जानना शब्दो के अर्थो को जानने की दिशा मे बहुत लाभकारी सफलता प्राप्त की जा सकती है।	This way the knowledge of such arraignment of the organization (of the letters), a successful chase can be had foe the values and features of the different words reservoir.
*	*
...क्रमश	...to be continued
२३-०३-२०१५ डा. सन्त कुमार कपूर	23-03-2015 Dr. Sant Kumar Kapoor